युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः।

तिङ्वाच्य कारकवाचिनि युष्मदि प्रयुज्यमाने ऽप्रयुज्यमाने च मध्यमः।

मध्यम पुरुष निम्नांकित दो अवस्थाओं में होता है –

'युष्मद्' शब्द उपपद होने पर, और क्रिया का कारक 'युष्मद्' होने पर। इस स्थिति में 'युष्मद्' शब्द का प्रयोग होने और न होने – इन दोनों ही अवस्थाओं में मध्यमपुरुष होता है।

उदाहरण के लिए 'युष्मद्' के कर्ता-कारक में होने पर त्वं गच्छसि। इस प्रकार मध्यमपुरुष 'सिप्' का प्रयोग हो, 'गच्छसि' रूप बनता है।

अस्मद्युत्तमः।

तथाभूते ऽस्मद्युत्तमः।

शेषे प्रथमः।

मध्यमोत्तमयोरविषये प्रथमः स्यात्।

संस्कृत रचना में कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार ही क्रिया का पुरुष और वचन होता है। पूर्ववर्ती सूत्र तिङस्त्रीणि में क्रिया के हेतुभूत तङ् प्रत्ययों के उत्तम, मध्यम, और प्रथम पुरुषों का विवेचन किया गया है। अतः इसके पश्चात् कारक के भी पुरुषों का विवेचन करना आवश्यक हो ही जाता है, क्योंकि कर्ता के अनुरूप ही क्रिया का प्रयोग होता है। इसी का विवेचन तीन सूत्रों में हुआ। इन सूत्रों के लिखने का यही अभिप्राय है कि कर्ता के पुरुष के अनुसार ही क्रिया-रूप का प्रयोग हो।